॥शिव दिग्बन्धन स्तोत्र॥

प्राच्यां मां पातु भूतेशः आग्नेय्यां पातु शङ्करः ।

दक्षिणे पातु मां रुद्रो नैरृत्यां स्थाणुरेव च ॥ ११॥

पश्चिमे खण्डपरशुर्वायव्यां चन्द्रशेखरः ।

उत्तरे गिरिशः पातु चैशान्यां ईश्वरः स्वयम् ॥ १२॥

ऊर्ध्वे मृडः सदा पातु चाऽधो मृत्युञ्जयः स्वयम् ।

जले स्थले चाऽन्तरिक्षे स्वप्ने जागरणे सदा ॥ १३॥

पिनाकी पातु मां प्रीत्या भक्तं वै भक्तवत्सलः ॥ १४॥

सिद्धि विधान : 10,000 की संख्या में पाठ करने से यह स्तोत्र सिद्ध होता है। सिद्धि के उपरांत इसका प्रयोग कर सकते हैं। महाशिवरात्रि पर्व पर **1000** पाठ द्वारा भी सिद्ध कर सकते हैं।

स्वामी रुपेश्वरानंद जी द्वारा संशोधित

स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम

बलुआ , जिला - चंदौली (उत्तर प्रदेश)

Mobile No. : 7607 233 230

https://swamirupeshwaranand.in/